हवाओं में ज़हर है

विनोद कुमार शर्मा

नया विकल्प प्रकाशन
94/52, तुलसी नगर, भोपाल

प्रथम संस्करण 1991
मूल्य 15 रुपये
प्रकाशक नया विकल्प प्रकाशन
94/52, तुलसी नगर, भोपाल
आवरण योगेन्द्र कुमार
मुद्रक प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स ए 21 झिलमिल
इण्डस्ट्रियल एरिया, शाहदरा, दिल्ली 110095

HAWAON MEIN ZEHAR HAI (Ghazals)
by Vinod Kumar Sharma Price Rs 15.00

'हैं कहा वो लोग, हर एक पूछता है
जो हवाओं में जहर को छानते हैं

—विनोद कुमार शर्मा

वरिष्ठ रचनाकार श्री निश्तर खानकाही के नाम

इस शहर म कभी अब जो तुम आओग
हर तरफ इन अधेरा म टकराओग

बच्चे-बच्च की आखा म दहशत यहा
तुम भी ताहर्फे मे दहशत निग जाओग

इस शहर म हवाआ की ग्फ्तार, उफ !
ग्सव हत्थे चढे तो बिखर जाओग

हाथ रख के कभी दिल प मत सोचना
वग्ना अपनी निगाहा मे गिर जाओग

अपन साय म लागा को परहज है
इम शहर म किसे प्यार सिखलाओग

कब तक अलग-अलग रंगों के परचम तुम लहराओगे
कब तक मजहब के प्यालों में जहर यहाँ छलकाओगे

भूखी नस्लों की उम्मीदें बुझी ख्वाब के घर टूटे
किसे खबर थी तुम मेहनतकश मजहब में बंट जाओगे

अपनी-अपनी जात से बाहर निकल के सारे साथ चलो
चार दरीचे खोलो वरना घुट घुट कर मर जाओगे

रंग बिरंगे बादल हैं सब कागज के फूलों जैसे
कागज के फूलों से बोलो खुशबू कैसे पाओगे

दूर देस को जाने वाले मुझे बताकर जा सकना
कितने चाँद सितारे लाना जब तुम वापिस आओगे

जिदगी मुश्किल नही पर दर न यू मूदा करो
घर तलक आए कोई एक रास्ता छोडा करो

एक दरीचा खोलकर दुनिया से रिश्ते जोड लो
जिंदगी एक फर्ज है इस फर्ज को पूरा करो

हो सके तो बादलो को ढूढ लाओ दोस्तो
धूप म तपती हुयी धरती से मत शिकवा करो

पाव की जजीर मत बनने दो मजहब को यहा
जेहनो की खिडकिया हरदम खुली रखा करो

धूप म मत खोलिए रिश्ता के कुछ छाते नये
सिलसिले बन जाए तो कुछ फासले छोडा करो

आती नस्लो को मिल हसती हुयी यह जिंदगी
इस तरह के खुशनुमा हालात तुम पैदा करो

जिस कदर ठहरा हुआ है झील का पानी यहा
एक पत्थर फेंककर हलचल यहा पैदा करो

तुम बुझा दत हो अक्सर फूककर एक रोशनी
हम जलायेंगे मगर गावो शहर एक रोशनी

तुम हम अधियार से दशन कराना छोड दो
दखत ह आजकल हम पशतर एक रोशनी

अब हमारी जिदगी भी खूब निखरेगी यहा
मुट्ठिया म कद सूरज शाम पर एक रोशनी

अब हमार हौसला का जिक्र है चारा तरफ
और कितन दिन रहगी बखबर एक रोशनी

हर तरफ हर सिम्त स हर रास्ते से आ मिलो
और कितन दिन चुराएगी नजर एक रोशनी

अफवाहा के इस मौसम म सच्ची बातें लिखना क्या
मुह मागे है दाम झूठ के सस्ते दामा बिकना क्या

थोडा और बढोग आग तो मजिल दिख जाएगी
थके कदम हो माना लेकिन बीच राह म रुकना क्या

बीते मौसम की तल्खी को बेहतर हो बिसरा दें हम
वही पुरान किस्से लेकर रोज़-रोज का झखना क्या

हमने तेज हवाआ के रुख पर भी दिए जलाए ह
फिर पथरीली राह मे रुककर पाव क छाले गिनना क्या

नयी उम्मीदें, नय तरान नयी उमगा की खुशबू
वही पुरानी बातें यारो नयी गज़ल म लिखना क्या

हर एक गली मुखातिब हमसे हर दरवाज़ा खुला मिले
आंगन-आंगन प्यार मुहब्बत का गुलदस्ता सजा मिले

यह मौसम सच्चा मौसम हो बाकी सब कुछ धोखा हो
मेरा पांव अगर फिसले तो उसके लब पर दुआ मिले

दुश्मन का घर जान के जिसको आज जलाने आए हो
ऐसा ना हो इसी के भीतर तुम्हें तुम्हारा खुदा मिले

हम पत्थर दिल मोम की सूरत पिघल पिघलकर बहते हैं
जब आंखों के आगे कोई लावारिस की चिता मिले

क्या फिर ऐसा होना यारो ! हर सूरत नामुमकिन है
हर चेहरे पर केवल उसका असली चेहरा लगा मिले

सब कुछ एक नज़र आता है बाहर भी और अंदर भी
रंग वही है रूप वही है फिर भी सीरत जुदा मिले

नही दोस्ती, भाइचारा, रिश्ते अब
चलो बदलने नही पड़ेंगे चेहरे अब

ऐसा सूखा पड़ा दिलो की धरती पर
आँखें लिखना भूल गयी हैं कतरे अब

सन्नाटो के शहर मे आहट कैसी है
चौक-चौक्कर जाग रहे हैं कुत्ते अब

हमको वह औकात बताने आए हैं
फूलो पर तोहमत धरते हैं भवरे अब

हर मुंडेर पर गिद्ध दिखाई पड़ते हैं
लगे, उड़ेंगे यहा लहू के छीटे अब

जिन दीवारो पर थे श्रम के छद लिखे
उनपे लिखे है चद मज़हबी नारे अब

राशनी के लिए कुछ न कुछ कीजिए
अब अधेरा की सत्ता बदल दीजिए

कल के अमृत की खातिर, मर दोस्तो !
इन हवाआ म फैना जहर पीजिए

है ग़रीबी से लटन की जुरअत कहा
धम के नाम पर सर कटा लीजिए

मुल्क सारा का सारा जुनूनी हुआ
होश आए इसे जरद कुछ कीजिए

जेहना म घृणा के सिवा कुछ नहीं
आती नस्लें हो बद्तर दुआ कीजिए

छटपटाकर वठ जायेंग यहा
पख कट जाए तो जायेग कहा

और कितने दिन जिएगी ख्वाब पर
बुझ रही है अब शहर की बिजलिया

खोलन वाल उलझ कर रह गए
इस कदर उलझी हुयी थी गुत्थिया

आग के नज़दीक मैं आया ही था
आ गया शोला लपककर दरमिया

सीकचा पर सर पटक देगी हवा
बद मत करना कभी ये खिडकिया

हर तरफ आलम वही दहशत वही
सोचने हैं और अब जायें कहा

दोस्तो अब रुदन है हँसी की जगह
बस्तियों म मिला ग़म खुशी की जगह

ज़ेहनों मे अँधेरा व जाले लगे
धुंध ही धुंध है रोशनी की जगह

हम शहर म मुहब्बत के गुल लाए हैं
लोग पत्थर न हों आदमी की जगह

दोस्तो ! कश्तियों का सफर अब कहाँ
अब मकाँ बन गए हैं नदी की जगह

हमको इसके सिवा और क्या चाहिए
ज़िंदगी चाहिए ज़िंदगी मों जगह

सोचते है कहर यह गुजर जाए ता
चलते चलते हवा गर ठहर जाए तो

डूबन क इराद स जाए मगर
चढ़ते दरिया का गुस्सा उतर जाए ता

तुमन बरसा जतन स बनाया जिसे
वह नगर पत्थरा का बिखर जाए ता

कल्पना कीजिए आप महरा म ह
दूर स कोई चहरा गुजर जाए ता

आधिया का बुलान की जिद मत करा
एक नन्हा सा दीपक सिहर जाए ता

लाग कस यहा जी मकेंग भला
एक कहर आए औ एक कहर जाए ता

दामन म खुशबू की दौलत भर लाए
पल दो पल ही सही गरीबी मुस्काए

हम नफरत की आग बुझाकर छोडेंगे
हाथ हमारा अगर जले तो जल जाए

सूद चुकाने की खातिर फिर कर्ज लिया
नए साल ने ऐसे भी दिन दिखलाए

क्या देखा क्या समझ गए क्या जान गए
जितने थे चुपचाप लोग सब चिल्लाए

ऐसा तो इस मुल्क म ही हो सकता है
हार किसी का गले किसी म पड जाए

मुश्किलो के बीच घबराए नही
फूल से रह दो कि मुरझाए नही

गुम्बदो म ढूढते रहिए उन्ह
जो परिन्दे लौट कर आए नही

चाहते थे लोग हगामा उठे
जख्म लेकिन हमने दिखलाए नही

क्या कोई जादू हुआ सच बात को
बोलने म लोग हकलाए नही

ये क्या कम है गर नही हल कर सके
दोस्तो ने प्रश्न उलझाए नही

मेरे जरमो की कुछ एस दवा किया करती है दुनिया
अमत-अमत कहकर मुझको जहर दिया करती है दुनिया

अफवाहा की नयी किताबे राज लिखा करती ह दुनिया
पढने वालो को बहका कर फास लिया करती है दुनिया

मदिर, मस्जिद, गुरुद्वार का अलग अलग बतलाकर यह
चलती सासो के लश्कर का लूट लिया करती है दुनिया

वीत गए वह दिन जब बस्ती आग बुझाने आती थी
आग बुझाने के एवज अब हवा दिया करती ह दुनिया

हरी भरी रिश्ता की बलें जब पीला पड जाती ह
तब दीवारो पर तस्वीरें टाग लिया करती है दुनिया

शाम ढले साहिल की ठडी रत प अपनी अगुली स
म अफसान लिख देता हूँ बाच लिया करती है दुनिया

लौट आते है जब सफर वाले
रास्ता पूछते है घर वाले

गाव, पगडडिया वफा की महक
ख्वाब बुनते है सब शहर वाले

यक-ब-यक क्या हुआ बगीचे के
पेड सब गिर गए समर वाले

ज़िदगी एक उदास बस्ती है
देख पाते है कब नजर वाले

शहर सुनसान हो गया है विनोद
होठ चुपचाप है खबर वाले

अबके मौसम बदले तो शायद यह नया हो जाएगा
सूखता पौधा सहन का फिर हरा हो जाएगा

आज जो झोंका हवा का छू रहा है प्यार से
कल यही आंधी की सूरत सरफिरा हो जाएगा

सर झुकाओगे तो सब रिश्ते रहेंगे बरकरार
सर उठाओगे तो हर मंजर खफा हो जाएगा

दर्दमंदी और वफा सब एक तमाशा हो गए
क्या खबर थी आदमी इतना बुरा हो जाएगा

दिल का दरवाजा खुला रक्खो कि आमदरफ्त हो
आज जो है मोतबर कल बेवफा हो जाएगा

बारिशें आईं तो सब रंगीन चेहरे धुल गए
क्या खबर थी अबके मौसम बेमजा हो जाएगा

हुलस हुलस कर नदी खुशी की भर जाएगी जीवन म
टुकडा-टुकडा धूप गिरे गर इस बर्फीले आगन म

वद दरीचे वाले घर भी आखें खोल पुकारेंग
आवारा सा हवा का झाका उतर आग इस सीनन म

अपने आपसे बातें करना कडव घूट निगलना है
फिर भी मैं बातें करता हू अपन आपसे दरपन म

उनसे पथरीली राहा का सफर कहा तक तय होगा
जिनके पाव थके रात थे चलते-चलते मधुवन म

दुनिया भर की दुनियादारी काधे पर लटकाए है
मेरा बच्चा बूढा होना सीख रहा है बचपन म

समझौता की राह् पकड ला तय मजिल हा जाएगी
बहुत कठिन है राह ढूढना दोस्त वफा के कानन म

जिंदगी क्या है बताना चाहिए
एक शख्से नौ जताना चाहिए

शाम होते ही धुआं भर जाएगा
खिड़कियों को खोल आना चाहिए

हम वो प्याले हैं जो अकसर सोचते हैं
पत्थरों का सर झुकाना चाहिए

कल तलक हम हाशिए के लोग थे
अब हम सारा जमाना चाहिए

हो उम्मीदों की किरण हर शब्द में
आज ऐसा गीत गाना चाहिए

लिख सको तो अधेरो म जुगनू लिखो
मत किसी की हथेली पे आसू लिखो

सूखती हर कली को नए रग दो
पत्ती पत्ती के अधरो पे खुशबू लिखो

वो किनारा नजर आ रहा है हम
अपने हाथो को तूफा म चप्पू लिखो

अब तो बस एक हैरत लगे जिदगी
तुम भी इस ख्वाब को एक जादू लिखो

अब हथेली प पानी की बूदें कहा
वो वक्त है कि आखो म बालू लिखो

गत अवेली घटा अकेली हवा अवली वस्ती म
हर इक नम्हा तनहा-तनहा मिला अकली वस्ती म

आहट है पावा की लेकिन दस्तक समझ रह है लोग
कानो-काना गज रही है मदा अवली वस्ती म

सन्नाटा से ? दीवारा से ? यह शीशा म ? दर म ?
हम किसमे पूछेंगे अपना पता अकेली बस्ती म

हमसाए स हमसाए का मिलन यहा कैसे होगा
साए से साया रहता है जुदा अकेली बस्ती म

आगन-आगन देख रहा है फैला दरिया दुखा का
गलियो-गलिया भटक रहा है खुदा अकेली वस्ता म

हम अक्सर चीख सुनत है ख्वाबो म, बेदारी म
साय साय करता रहता है खला अकेली वस्ती म

जीना अगर हुआ काँटा पर तो भी जीवन जी लेंगे
लेकिन ये दावा है अपना ख्वाब गुलों के देखेंगे

रंग बदलते ही मौसम के बस्ती रंग बदलती है
अबके पतझर के मौसम में कौन है अपना सोचेंगे

हमी ऐसी बातें कितनी सोच के घर से निकले थे
खुशी अगर मिल जाएगी तो बस्ती बस्ती बाँटेंगे

मन के अन्दर भेद छुपा है खुशियों का और दुखों का
पागल दुनियावाले लेकिन बाहर-बाहर ढूँढेंगे

साँसों के बंधन उलझे उलझे सजे सजाए चेहरे हैं
किसे यकीं है कल का सूरज सारे मिलकर देखेंगे

हम सूखे पत्तों की सूरत तब हवा में उड़ते हैं
हवा जहाँ ठहरेगी आकर हम भी वहीं पे ठहरेंगे

कभी मासूमो-चेकस पर कभी बिस्मिल प पडता है
तुम्हारे हाथ का खजर कहा कातिल प पडता है

सुलग उठती है धरती दूर तक बारिश के मौसम म
तुम्हारी जुल्फ का साया कभी जो दिल प पडता है

समझकर सोचकर कीजे यहा शिकवा शिकायत भी
जरा सी बात से अतर बडा हासिल प पडता है

किसी दिल म उतर जाती है य तस्वीर बनकर भी
यहा अक्से-वफा एक बार तो हर दिल प पडता है

मेरे शेरो म अपने दुख नजर आते है दुनिया को
असर मेरी कहानी का भरी महफिल प पडता है

आग जलती है मगर उसस धुआ उठता नही
इसलिए शायद यहा अब काफिला रुकता नही

जो भडक्कर जल गए ह रात तक बुझ जायेंग
जो दिया मद्धिम जलेगा सुबह तक बुझता नही

इस पुरानी लीक पर चलन के हम आदी नही
कुछ नया कर जायें इसका हौसला मिलता नही

ह किस तुझको बया करने की हिम्मत ज़िदगी !
हम जा रखते है वो लहजा दूसरा रखता नही

क्या भरोसा अब करें उसका जो कोसा दूर ह
आदमी की चीख ही जब आदमी सुनता नही

तोड डाले ह सभी रिश्त जुदा सबसे हुए
ढूढत हैं अब उसे जिसमे कोई रिश्ता नही

एक एक पल में जीवन जीना, एक एक पल में मरना सीख
सूरज-सूरज तपने वाले, दरिया दरिया बुझना सीख

रुख की दुनिया जगमग-जगमग, भीतर भीतर तनहाई
महानगर में आने वाले तू भी मेकप करना सीख

कसबा कसबा अफवाहें हैं, गांव शहर श्मशान हुए
अखबारों में कालम-कॉलम, लहू के अक्षर पढ़ना सीख

आने वाली राह सहल हो इसका किसे भरोसा है
तू पत्थर है मोम नहीं है तेज धूप में चलना सीख

रुत बदलेगी रुख बदलेंगे, मिलने वाले छूटेंगे
सबके साथ अगर चलना हो तू भी रंग बदलना सीख

आधा-आधा काले पर्दे, कानों कानों सरगोशी
अंधी बस्ती के बाशिन्दे! किस्से कहना-सुनना सीख

रिश्ता मे घुटन आगन-आगन
तपता है वदन सावन सावन

सासा की थकन जीवन-जीवन
घुटता है धुआ चिलमन चिलमन

फली है उदासा गलिया म
बिखरी है खिजा गुलशन-गुलशन

इज्जत का दिखावा क्या कहिए
धब्बे है यहा दामन-दामन

रफ्फू से बचाना मुश्किल है
उधडी है हया सीवन सीवन

काश कि कोई सूरत हो
आखिर जहर य अमृत हो

प्यार बन बस्ती-बस्ती
अपना शहर मुहब्बत हो

नफरत के शोले बुझ जायें
हर घर प्यार का पवन हो

सुख और दुख मिलकर बाटे
सबकी एक सी किस्मत हो

मदिर मस्जिद साथ सज
सब धर्मों की इज्जत हो

मै बस्ती तुम सागर हो
ऐसा कभी मुकद्दर हो

बीते चहरे धुधले थे
आती सूरत बहतर हो

पाव खल्के वे ढक पाए
इतनी बडी तो चादर हो

सबको मिले खुशी थोडी
सबका भाग्य बराबर हो

पीछे बस्ती खेत हरे
आगे खुला समदर हो

घर घर की दीवारे हटे
अबके एसा मजर हो

गज़लो म फसानो म गीतो म क्या करिय
जो आग का किस्सा है शोलो म क्या करिय

इक दिल म लपकती है हर दिल म धधकन को
वो आग जो भडकी है सीनो म क्या करिय

हर लम्हा कुचलते हैं कुछ टूट खामोशी को
जो रात गुज़रती है गावो म क्या करिय

जो ख्वाब तेरी आख इस दम भी सजाए है
इस शहर की सडको पर नारो म क्या करिय

तारीक फजाओ म उजली सी किरण क्या है
साथी ये सहर ही है खुशियो म क्या करिय

आग ही आग हो फिर भी जलते नहीं
क्या चिता की तरह तुम धधकते नहीं

ये हवायें बुझाने लगी हैं चिराग
इन हवाओं का रुख क्या बदलते नहीं

मेरे अंधेरा ने ताने हैं चारों तरफ
इन अंधेरों के फन क्या कुचलते नहीं

तुम किसी हाथ के इक खिलौने नहीं
बात इतनी सी है क्या समझते नहीं

ख्वाब तुममें हैं रोशन नया भोर के
क्या बदलने को मन कुछ बदलते नहीं

हर तरफ शोर ही शोर है आ मिला
क्या तुम अपने घरों से निकलते नहीं

वक्त सौ-सौ दफा दे चुका है सदा
क्यूं सम्भलते नहीं, क्यूं सम्भलते नहीं

मुस्तहक है हम हमारा जाम हमको चाहिए
मैकदे की खुशनुमा शाम हमको चाहिए

एक कच्ची उम्र के बच्च न कल मुझसे कहा
भूख लगती है ऐ साहिब ! काम हमको चाहिए

मात देकर ज़िंदगी को उसके ही मदान पर
मरने वाले न कहा ईनाम हमको चाहिए

कितनी महरुमी है तरे शहर के हर बाग म
खुशनुमा यादो से महकी शाम हमको चाहिए

हम परिंदे ह अमन के फिर रहे ह जा ब जा
हम उतरना चाहते ह बाम हमको चाहिए

खुशनुमा शाम शहरों में ढलती नहीं
गांव की रात काटे भी कटती नहीं

क्या खबर थी कि ऐसी भी रुत आएगी
अब नदी सूखती है मचलती नहीं

आग भी है लहू भी है, है जिस्म भी
आओ देखें ये शम्मा क्यूं जलती नहीं

आओ छेड़ें लगन उम्मीदों भरी
छोड़ दें रहगुज़र जो कि चलती नहीं

क्या हवाओं के रुख तुम बदलते नहीं
ज़िंदगी हादसों से निकलती नहीं

बेवफा उसको कह गर तो खफा होती है
जिंदगी चार कदम चल के जुदा होती ह

एक मुद्दत मे चुने हमने जहा क आसू
ग वो पजी है जो मुश्किल से जमा होती ह

कौन सुन पाएगा पत्थर की गली म इसको
यू भी खामोश बहुत दिल की सदा होती है

हमको हर रात सुलाता है थपकिया देकर
हमको जो रोज जगाती है हवा होती है

हमको रातो स नए ख्वाब मिला करत ह
हमको सूरज से नयी आस अता होती ह

हम कहा सारी हकीकत जानते है
पर तुम्हारा दर्द हम पहचानते है

तुम शरीके-गम हमारे हो मगर है
हम तुम्हे खुद से अलग कब मानते है

हो कि हम कुछ सोचकर ही दरबदर है
यू मुसाफिर घर का रस्ता जानते है

आपका क्या फर्ज हो खोटे-खरे का
आप तो सिक्के चलाना जानते है

है कहा वो लोग हर एक पूछता है
जो हवाओ मे जहर का जानते है

हम जा ठहर हुए ह किधर जायेंगे
जो मुसाफिर ह वो दरबदर जायेंग

हमको डर है जमाने की रफ्तार से
इसके हत्थे चढ़े तो निखर जायेंगे

तुम हवाआ म दामन उडात चला
जिनपे साया पडेगा मवर जायेंग

अब उस भी किसी खाफ का डर नहीं
हम भी अपनी हदा म गुजर जायेग

इनका अपनी पनाहा म ल लीजिए
ये दिए आधिया म सिहर जायेंग

गाँव शहर कस्बे बस्ती में मिलकर साथ चलेंगे लोग
इंद्रधनुष सा खिल उठेंगे गोरे नीले काले लोग

जो पीछे ही रह जाते हैं उनको आगे आने दो
अपना रस्ता बना ही लेंगे आगे आने वाले लोग

उस ख्वाब को बस्ती समझा जिसमें प्यार दिखाई दे
मुझसे मिलते हैं बस्ती-बस्ती आग लगाने वाले लोग

फल शजर का फल लगेगी दुनिया भर के सेना में
दिल में लगा सोच रहे हैं नफरत बाँटने वाले लोग

मेरा नाम मिटा रहे हैं खुद ही अपने जेहन में
साहमत मौसम पर रखते हैं नक्श मिटाने वाले लोग

रग कुछ अदाज कुछ, सूरत जुदा खुशबू अलग
क्या गजब है हो गया है आख से आसू अलग

पूछत ह लोग अब मिलत ही मरी खरियत
चल रहा है इस नगर पे मर प भी जादू अलग

उस समय कोई नही आया मर नजदीक भी
वक्त वो जब हो गए थ जिस्म म बाजू अलग

शात था दरिया हवा बहती थी सार साथ थ
जब उठा तूफान तो कश्ती से थ चप्पू अलग

रारता है शहर का और तीरगी चारो तरफ
हो चल है अब तो सार गाव के जुगनू अलग

एक वो भी वक्त गुजरा ह कि जिसका खौफ है
रास्ते से रास्ता हर स् से थी हर सू अलग

मेरा तन पिघल रहा है
कि अलाव जल रहा है

कहीं डोर टूटती है
कोई हाथ मल रहा है

मुझे देखिएगा कब तक
मेरा रूप ढल रहा है

यहाँ खामुशी में देखो
तूफ़ान पल रहा है

ज़रा तीरगी में कहना
ये चराग़ जल रहा है

कभी गाँव बन के आना
मेरा गाँव जल रहा है

कुछ चहरे पहचान मे रख
शहर शहर य ध्यान म रख

कागज क है ? फूल ना हैं !
इनस सजा गुलदान म रख

प्यार वफा रिश्त नात
एक एक श दुकान म रख

दरिया पार उतरना है
ता कश्ती तूफान म रख

रात छपा ने पहलू मे
सूरज रोशनदान म रख

चाँद तारे देखकर कब तक गुज़ारूँ ज़िंदगी
मैं किसे अपना कहूँ किसको पुकारूँ ज़िंदगी

जब खबर है आँधियाँ पुरज़े उड़ा देंगी मेरे
किसलिए, उफ़! कब तलक खुद को सँवारूँ ज़िंदगी

तू तो बस पत्थर की मूरत की तरह बेजान है
किसलिए मैं आरती तेरी उतारूँ ज़िंदगी

किस सितमगर का पता ढूँढूँ तुम्हारे शहर में
तीर किस बेदर्द का दिल में उतारूँ ज़िंदगी

वक्त क्या सब दोस्त भी आखिर जुदा मुझसे हुए
तू बता अब रास्ता किसका निहारूँ ज़िंदगी

दस्तकों से इस नगर के द्वार खुलते ही नहीं
यार, किस दीवार पे सर दे के मारूँ ज़िंदगी

आ भी जा इस उम्र की वीरानियों में आ भी जा
रात दिन आठों पहर तुझको पुकारूँ ज़िंदगी

सर से जुनून-वफा न उतर
शाम ढले पर नशा न उतरे

दोस्त उस कहती है दुनिया
जा मौके पर खरा न उतरे

बुझत शोले धधक उठे है
कही फलक स हवा न उतरे

हर मौसम म यही दुआ की
तरा रग हिना न उतर

रह दमकता सूरज जसा
रगे-हर्फे-वफा न उतर

जगल जगल धूप नहा थी
महरा-सहरा घटा न उतर

रग बदलू तो वही रग पुराना आए
बस इस शहर म जीने का सलीका आए

आख खोलू तो उदासी का समदर दखू
आख मूदू तो नज़र चाद सा चेहरा आए

घर की दीवार पुकारे तो मैं अदर जाऊ
अपने ही दर पे खड़ा हूँ कि बुलावा आए

बस कह दू कि अधेरे का सफर खत्म हुआ
जब उजाला न उजाले का परिंदा आए

मैं भी बजारा मिजाजी म छुड़ा लू दामन
मेरे रस्ते म अगर ठौर ठिकाना आए

उदास आख का मजर पुकार लता ह
कभी-कभी ता मुझे घर पुकार लता ह

सभी ता आस का दीपक जलाक चलत हैं
किसी किसी का मुकद्दर पुकार लता है

किसी भी रत्म प इतना नही जमान म
बिफरती मौज का सागर पुकार लता है

धरा प टूटकर गिरती ह चुप खलाआ की
जमी का जब कभी अबर पुकार लता है

तुम्हार शहर की रगीन रौनका म विनोद'
भटक भी जाऊ मगर घर पुकार लता है

दिन निकलते ही परिंदे उड़ गए बैठे हुए
काफिले मंज़िल की जानिब चल पड़े ठहरे हुए

घर की दीवारें भी शायद अब न पहचानें मुझे
एक मुद्दत हो गयी है मुझको घर देखे हुए

वक्त की बाहों में बाहें डालकर चलता हूँ मैं
अलविदा कहते हैं मुझको काफिले ठहरे हुए

छटपटाकर उड़ गया कोई परिन्दा बाम से
छोड़कर आंगन में सब उजान पर बिखरे हुए

कौन नए घाव देखेगा शहर बीमार है
आप अपने ज़ख्म पर मरहम लगा हँसते हुए

प-थर की हवली से निकला है हवा बनके
शीशे क घरा-ा प टूटेगा कजा बनके

कुछ दर अगर बरस तो प्यास बुझे शायद
वो प्यार का बादल जो छाया है घटा बनके

क्यू बज़्म बहारा म पत्थर की तरह बैठा
महको भी किसी गुल से खुश्बूए वफा बनके

उस दिन को तरसता हूँ जब जिस्म मेरा होगा
हा दिल तो धड़कता ह सीन म मेरा बनके

अब और नही रखू पलको को खुली अपनी
अब नीद उतर आए आखो म नशा बनके

तुम मिले जब कभी जिंदगी की तरह
धूप लगने लगी चांदनी की तरह

खौफ फैला शहर में तो इतना हुआ
लोग मिलने लगे अजनबी की तरह

मकद प्यास की बस्तियां बन गए
जाम खाली मिले तिश्नगी की तरह

हूँ अंधेरे के जंगल में भटका हुआ
पास कोई मिले रोशनी की तरह

इक तबस्सुम खिली आग के होंठ पर
एक तराना जगा खामुशी की तरह

मंजिलें तक सफर कोई मुश्किल नहीं
हमको न कर सका आदमी की तरह

मर साथ साथ थी जिदगी
मुझे याद है य ख्याल भी

तेर हाथ गाया कि जाम ह
मरी दस्तरस म है तिश्नगी

मैं ख्याल बुनता हूँ दिन ढल
मरे गीत सुनती है खामुशी

वा वहा गए जा मुरीद थ
य सवाल करती है शायरी

इसे हम समझते हा, ठीक ह
मरा ज़िदगी है सवाल भी

चला उन मकामा का रुख करें
जहा पाव चूमगी रागनी

उदास दिल की खामोशियो म मैं दद बनकर उभर रहा हूँ
मैं गहरे पानी की तह म छुप कर किसी समन्दर को ढूंढता हूँ

किसी की आखो ने जब कहा ये कि मेरा जीना ही रमवर है
मुझे न जाने ये क्या लगा है मैं अपने मकसद का पा गया हूँ

निखर गयी है बदन की रगत कुछ और चेहरा चमक उठा है
मैं एक पत्थर सा जब से दरिया की तेज धारा म आ गया हूँ

वो मेरे चेहरे की फूलो जैसी शगुफ्तगी म यू खो गया था
उसे ये जैसे खबर नही थी, म एक दिन क लिए खिला हूँ

जो एक खिडकी हो बद मुझ पर तो एक दरीचा हो वा कही पर
मैं अपने भीतर की आख मूदू तो अपने बाहर को खोजता हूँ

किस हाल म ज़िदा हू कुछ इसका पता लिक्खू
वो रेत का घर लिक्खे मैं तेज़ हवा लिक्खू

हर बार वही सपने यादो म उभरते हैं
मुद्दत से परेशा हूँ एक ख़्वाब नया लिक्खू

उन शोख निगाहा स कह दो न इधर देखें
मैं आख के डोरा म जब सुर्ख हया लिक्खू

तादाद बढा लू मैं कुछ और गुनाहा की
वो मेरी ख़ता लिक्खे म उसको दुआ लिक्खू

मैं रोज बदलता हूँ कपडो की तरह घर को
अब कौन सी बस्ती का किस घर का पता लिक्खू

किस तरह जी रहा हूँ य चर्चा नही
हाल जी का किसी न पूछा नही

वो मेरा रास्ता दखता ही रहा
मैं ख्यालों म जगल से नौटा नही

अबके ऐस शहर मे फस हू जहा
दिल म चाहत लिए कार्ड मिलता नही

हम कि दहशत मे आखो का भीचे रह
हमने मजर जो दिलकश था देखा नही

तेरी यादो के जुगन है साथी मर
मै सफर म हू नेकिन अकेला नही

इसकी कीमत नही कुछ भी बाजार म
जिंदगी की एवज कुछ भी मिलता नही

दिन म बीत दिना के उजाल लिए
सामन जो अधेरा है देखू उस
घर के प्रन्ह कमरे के माहौल म
वक्त रूठा हुआ है मना लू उसे

आहटें दूर जात हुए पावा की
दिल के काना से मैंने सुनी थी मगर
हाठ अपने को सख्ती से भींचे रह
दिल य कहता रहा कि पुकारू उसे

मै कि पहर प जागा हुआ हूँ अभी
साथ सोया पडा है थका हमसफर
अलसुबह चल पडेंग यहा से कही
रात ढलने लगी है जगा लू उस

दिन के जख्मा का ताजा लहू देखना
कितना काला है तारीक घर की तरह
एक कतरा जा आखा स टपका अभी
सुख होठा की लाली से रग द उसे

जिदगी बाझ तरा ह बार गरा
इस जमान के कमजार काधे बहुत
एक मुद्दत स चिता यही है मुझे
अपन मजबूत काधो प रखू उसे

दिल म चाहत लिए काई तनहा फिरे
एक पत्ता हवा म अकेला फिर

जिंदगी हमा काटी है कुछ इस तरह
जसे शम्आ लिए कोई अधा फिर

सबके चेहरा प कालिख पुती है यहा
हर कोई अपनी सूरत छुपाता फिरे

म बि निकला हूँ यू जुस्तजू म तेरी
जिस्म का ढूढता जैसे साया फिर

हमका घर फूककर दखना ही पडा
बस्ती बस्ता लिए तुम तमाशा फिर

बडा सफर हो तो प्यास गुजरे
तमाम चेहरा से आस गुजर

हवायें मुद्दत स दम ब खुद ह
कभी य मौसम उदास गुजरे

क्या कोइ चीखा है आसमा पर
जमी के होशोहवास गुजर

नजर के आग मे भीड गुजरी
मजे-मजाए निवास गुजरे

किसी न सोचा कभी नहीं क्या
नदी की आखा म प्यास गुजर

रुका हुआ है यह काफिला भी
हवायें ठहरें ता सास गुजरे

उदासी म डूब हुए जगला में हवा भी तेरा नाम लेकर पुकारे
कोई किस तरह तेरी यादो से छूटे, कहा दिन बिताए कहा शब गुजारे

मरा मुश्किले इतनी आसा नही कि मैं झपकू पलक आर बदल जाए मौसम
आहिस्ता-आहिस्ता बदलेंगी चीजें कोई लाख पत्थर प सर दे के मार

भटकते भटकत थके जा रह है सफर खत्म होता नही जिन्दगी का
हम रोशनी की कशिश खीचती है चले जा रहे हैं इसी के सहारे

कभी खुद को सोचा नही उम्र भर म, कभी उसको भूले नही एक पल भी
अजब कश्मकश मे गुजारा है जीवन कोई किस तरह इसको अपना पुकार

य जद्दोजहद शहर की जिंदगी म ह बदली हुई गाव की भी फजायें
कहा खा गए वो मरासिम वो रिश्त कहा बुझ गए वो दमकते सितारे

यहा हर्फ-हर्फ तक सलामत नही है
य हकीकत भी तो अब हकीकत नही है

चला और कुछ दिन अधेरा मे जी लें
अभी दिन निकलन की सूरत नही है

मुझे माफ करना मैं वीरा म खुश हूँ
मुझे घर बदलन की आदत नही है

मैं कैसे जिऊगा तुम्हार शहर म
यहा बोलन की इजाजत नही है

पडी सोच मद्धिम हुए तार ढील
कि अब शायरी म कसावट नही है

सभी खुदगरजी की दुनिया म गुम ह
किसी को किसी की जरूरत नही है

दिल म ह परछाइया जब तक दरदीवार की
पानिया म जिस तरह सूरत दिखे मीनार की

याद यू आई कि जिस्मो जा क कमर हिल गए
दद यू उठा कि इटें गिर गयी दीवार की

हा तर एहसान क साए तल जीते ह हम
है कहा जुरअत दिन कमजोर म इनकार की

आज जान क्या कहर टूटा हो दुनिया पर 'विनोद
आज सूरत सुबह से देखी नही अखबार की

नाग होते हो हमसे तो हो बदगुमां
हमने हक के लिए खोल दी है जुबा

आग हर दिल में शायद सुलगने लगी
उठ रहा है यहां से वहां तक धुआं

आज तानें हैं सर पांव की धूल ने
आज कदमों के नीचे है दाना जहां

किसलिए जिस्म कलियों के नोचे गए
किसलिए फूंक डाली गयी बस्तियां

जिस्म छलनी हुआ, चाक दामन हुआ
और कितनी उड़ेंगी मेरी धज्जियां

दिन ढले पागलों की तरह घूमना
रात भर ढूंढना मंज़िलें-बेनिशां

कभी मक्दे और कभी जाम बदले
ठिकाने तुम्हारे हरेक शाम बदल

तरी हर नजर अजनवी सी लगी है
तेरी हर अदा न भी पगाम बदने

हम क्या हवाआ को भी है शिकायत
तेरे घर ने अक्सर दरो-वाम बदले

तेरा कोई बदनाम मिलता नही है
तेर आशिको ने भी अब नाम बदले

मदारी था मैं अब बना हूँ जमूरा
कहा तक काई इश्क म काम बदले

जिस्म सदमा स जल रह है यहा
सर प सूरज उबल रह है यहा

शाम ठडी हवा भी आएगी
हम उम्मीदो प पल रह है यहा

आदमी रुक गया सा लगता है
सिफ सिक्के ही चल रह है यहा

हम जो सभले तो क्या तअज्जुब है
गिरन वाले सभल रह है यहा

मौसमा न सिखा दिया शायद
रग चेहरे बदल रहे हैं यहा